नॉर्मन रॉकवेल की

द शाइनर*

शुद्धसत्त्व बसु

अमरीका के महान चित्रकार नॉर्मन रॉकवेल के इस अद्‌भुत चित्र के बारे में जितना भी कहा जाए कम होगा। "द शाइनर" नाम की यह ऑएल पेंटिंग *सैटरडे इवनिंग पोस्ट* के कवर में 23 मई 1953 में छपी थी। वैसे तो रॉकवेल ने कई पत्रिकाओं का कवर पेज बनाया पर *सैटरडे इवनिंग पोस्ट* से उन्हें लोगों के बीच काफी मशहूरियत मिली। दिलचस्प बात है कि *सैटरडे इवनिंग पोस्ट* बच्चों की पत्रिका नहीं थी फिर भी इसके कवर पर रॉकवेल लगातार बच्चों के चित्र बनाते रहे।

* चोट से नीली पड़ी आँख

अपने ज़्यादातर चित्रों में रॉकवेल ने उस अमरीका की तस्वीर बनाई जो आसपास कहीं नहीं था – वह अगर था तो बस अमरीकावासियों के ख्वाबों में। शायद इसका एक कारण चार्ल्स डिकन्स की कहानियों का असर रहा हो जो उन्होंने अपने पिता से सुनी थीं।

"द शाइनर" एक मुस्कुराती हुई बिन्दास लड़की का चित्र है। लगता है उसे खुद पर बड़ा गर्व हो रहा है। शायद किसी बड़ी लड़ाई में जीतकर आई है वो!

ध्यान से देखो तो इस पेंटिंग में मज़े के साथ-साथ गम्भीर तनाव भी नज़र आएगा। यानी तनाव और मज़े जैसी दो एकदम उलट स्थितियाँ एक ही कैनवास में नज़र आ रही हैं। हाँ, लड़की की कुछ खास अदाओं के कारण इसमें थोड़ा मज़ाकियापन आ गया है। कैनवास पर विपरीत मूड की चीज़ें दिखाने में रॉकवेल को महारत हासिल थी। *सैटरडे इवनिंग पोस्ट* में तो वे अक्सर ऐसी ही स्थितियों को दिखाया करते थे। इससे सीन की नाटकीयता और बढ़ जाती है।

"द शाइनर" में रॉकवेल ने कैनवास को इस तरह बाँटा है कि एक चौकोन के अन्दर दूसरा चौकोन है। इससे लड़की की छवि और ज़्यादा उभरकर आई है। गम्भीर विषय को एक सँकरे हिस्से में दिखाया गया है। प्रिंसिपल के चेहरे पर कठोरता भी दिख रही है और अविश्वास भी। ऐसे भाव दिखाना रॉकवेल की एक और बड़ी खासियत है। टीचर बच्ची को पीछे से देख रही है। देखने का यह तरीका कुछ अजीब तो है, पर इसके फायदे भी हैं। एक तो इससे चित्र देखने वाले को पता चल जाता है कि किसे देखा जा रहा है और दूसरे, उँगली से इशारा करके बताने से तो यह अच्छा ही है, हैना! और हाँ, प्रिंसिपल की नेमप्लेट में आधा-अधूरा नाम दिखाना उन्हें चिढ़ाने जैसा नहीं लगता तुम्हें?

अब लड़की के बैठने के अन्दाज़ पर गौर करो – टाँगें ज़रा बाहर की ओर खुली हुई हैं जबकि पैर अन्दर की ओर मुड़े हुए से हैं। वो कुछ ऐसे बैठी है कि हँसी आकर ही रहे। और देखो उसके इस बैठने को किस कदर बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया गया है! इस पेंटिंग की एक और खासियत इसी बात में है।

कई बार चित्रकार किसी चीज़ को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर या तोड़-मोड़कर दिखाते हैं। जैसे, कैरीकेचर, कार्टून वगैरह में होता है। वहाँ तो पूरा का पूरा ही बिगड़ा होता है लेकिन यहाँ कुछ हिस्सा बिगाड़ा गया है और कुछ वास्तविक रहा है। और बिगड़े हिस्से को वास्तविक हिस्से से इस तरह जोड़ा गया है कि पता ही नहीं चलता कि कहीं जोड़ भी है। कुल मिलाकर चित्र पूरी तरह से स्वाभाविक लगता है। जिसे हम "देख पाने की क्षमता" कहते हैं वह रॉकवेल में बखूबी मौजूद थी।

चित्र में खिड़की नदारद है पर, उससे आती रोशनी स्पष्ट दिख रही है। प्रिंसिपल के चेहरे पर, फर्श पर उसे देखा जा सकता है।

नॉर्मन रॉकवेल के चित्रों में बहुत-सी चीज़ें छुपी हुई-सी रहती हैं। कह सकते हैं कि उनके चित्रों में फुसफुसाहटें होती हैं, शोर नहीं।

मेरा पसन्दीदा चित्र

इस कॉलम में लेखक, कवि एवं चित्रकार अपने पसन्दीदा चित्र के बारे में बताएँगे। साथ ही वे उस चित्र की खूबियों के बारे में भी लिखेंगे।

तुम्हें चकमक में हर बार कई चित्र देखने को मिलते हैं। तुम्हें किस तरह के चित्र लुभाते हैं? क्या तुमने उनकी खूबियों के बारे में कभी सोचा है!!!

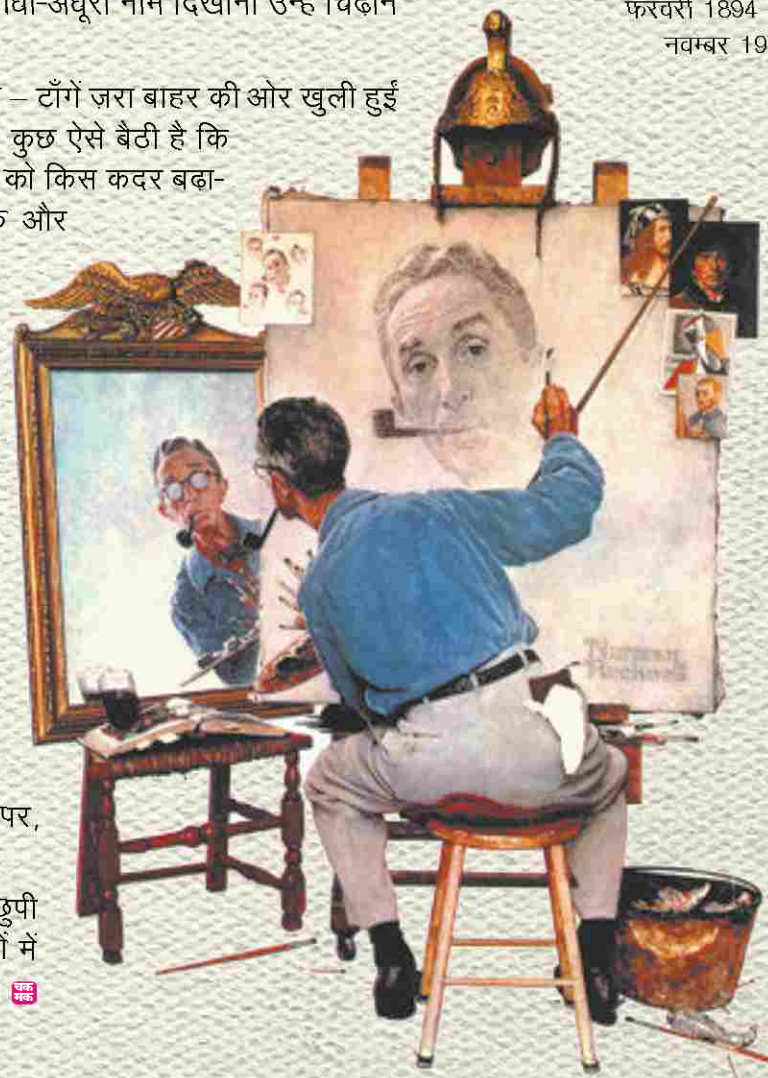

इक पेंटिंग और नॉर्मन तीनः शीशे में खुद को देख अपनी पेंटिंग बनाते नॉर्मन रॉकवेल (3 फ़रवरी 1894 – 8 नवम्बर 1978)